



Like You and 20K others like this.

चिरंजीवी हनुमान जी का प्रभु राम और माता सीता के विवाह के बारे में व्याख्यान

जब यजमान दयानी के लिए अर्पण की प्रक्रिया पूर्ण हुई तो हनुमान जी से उससे पूछा कि वह प्रसाद में क्या पाने की इच्छा रखती है। दयानी ने अन्य मातांगो की तरह उस ब्रह्मज्ञान की इच्छा प्रकट की जो मोक्ष की ओर ले जाता है।

हनुमान जी बोले - “हे शिष्यों, प्रभु राम और माता सीता के विवाह को देखना किसी भी भक्त के लिए सर्वाधिक आनंददायी अनुभव है। मैं काल में पीछे जाकर प्रायः इस घटना को देखता हूँ। आज मैं चाहता हूँ कि आप भी इसे देखें, मेरी आँखों से।

“जब भी मैं समय में पीछे जाकर प्रभु राम और माता सीता के विवाह को देखता हूँ, मुझे उनके बालपन की कुछ घटनाएँ भी दिखाई देती हैं जो माता सीता के स्वयंवर से सम्बंधित हैं।

“ऐसी ही एक घटना में राजकुमार राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न लगभग सात साल की उम्र के थे। अयोध्या के महल में दोपहर के खाने की घंटी अभी अभी बजी थी। राम, भरत और शत्रुघ्न अपने अपने कक्षों से निकलकर बाहर आ गए थे। वे महल के एक गलियारे में लक्ष्मण की प्रतीक्षा कर रहे थे जो अभी माता सुमित्रा के कक्ष में थे। राजकुमार राम उस कक्ष के दरवाजे को ऐसे घूर रहे थे जैसे वे उसे अपने मन की शक्ति द्वारा खोलने का प्रयास कर रहे हों।

“भरत, अभी देखना, मैं इस द्वार को खोलूँगा।” राजकुमार राम बोले।

“भरत और शत्रुघ्न ने द्वार की ओर उत्सुकता से देखा। फिर अचानक द्वार खुला और लक्ष्मण बाहर निकले।

“देखा! मैंने द्वार खोला।” राजकुमार राम बोले।

“भरत और शत्रुघ्न हंसने लगे। लक्ष्मण बोले - “क्या हुआ?”

“भरत बोले - “भ्राता राम कह रहे हैं द्वार उन्होंने खोला, आपने नहीं।”

“लक्ष्मण बोले - “स्वाभाविक है, द्वार मैंने खोला।”

“राजकुमार राम ने पुनः दावा किया - “द्वार मैंने खोला।”

“राजकुमार लक्ष्मण ने राजकुमार राम की ओर नटखट नजर डाली और मुस्कराए |

“फिर राम और लक्ष्मण दोनों अपने अन्य दो भाइयों की ओर मुड़कर एक साथ बोले – “मैंने द्वार खोला ... मैं , परमात्मा |”

“भरत और शत्रुघ्न मसला समझ गए | दोनों एक साथ बोले – “और मैं इससे सहमत हूँ | मैं , परमात्मा |”

“सभी राजकुमार हँसे और भोजन कक्ष की ओर बढ़ गए |

“असल में , जब से उन्होंने अपने गुरु से ‘परमात्मा’ के बारे में जाना था , सभी राजकुमार ‘परमात्मा’ वाले चुटकुले बना बनाकर हंस रहे थे |

“उन्होंने जाना था कि परमात्मा एक है और हर कण में विद्यमान है | उन्होंने ये भी जाना था कि परमात्मा को केवल “मैं” कहकर संबोधित किया जा सकता है , ‘वह’ अथवा ‘आप’ नहीं |

“अगर आप किसी की कल्पना करे और कहें कि “वह परमात्मा है”, तो जो कल्पना कर रहा है वो कौन है? जब परमात्मा सबमे विद्यमान है तो जो परमात्मा की कल्पना कर रहा है वह परमात्मा से भिन्न कैसे हो सकता है?

“इसलिए परमात्मा की न तो कल्पना की जा सकती है और न ही परमात्मा को समझा जा सकता है | परमात्मा को केवल प्रथम पुरुष ‘मैं’ के रूप में अनुभव किया जा सकता है |

“परमात्मा के लिए एकमात्र वाक्य “मैं परमात्मा हूँ” हो सकता है | यह वाक्य किसी नौशिखिये के मुख से मजाक अथवा घमंड प्रतीत हो सकता है | प्रायः लोग इस वाक्य का प्रयोग करने की बजाय ‘परमात्मा मेरे अन्दर है’, ‘मैं तथा पूर्ण विश्व परमात्मा के अन्दर है’, आदि वाक्यों का प्रयोग करते हैं जो कि सही नहीं है |

“जब एक गुरु अपने शिष्यों को परमात्मा के बारे में बताते हैं , शिष्य परमात्मा की कल्पना करने का प्रयास करते हैं | कल्पना करने में कुछ गलत नहीं है यदि वह कल्पना आपको ‘मैं परमात्मा हूँ’ के अनुभव की ओर ले जाए |

“नौशिखिये परमात्मा को दो तरह से कल्पित करते हैं | कुछ कल्पना करते हैं कि परमात्मा कोई ऐसी अदृश्य शक्ति है जो हर किसी के अन्दर वास करती है | अन्य कल्पना करते हैं कि परमात्मा एक बहुत बड़ी कोई चीज है जिसके अंदर पूरा विश्व समाया हुआ है |

“ये दोनों कल्पनाये आपको परमात्मा के अनुभव की ओर ले जाने में असमर्थ है | जब देवी कौशल्या ने राजकुमारों को परमात्मा के विषय में मजाक करते सुना तो उन्होंने उनको परमात्मा की ऐसी कल्पना दी जो उन्हें परमात्मा के अनुभव की ओर ले जा सकती थी |

“जब राजकुमार भोजन कक्ष में आये तब भी वे परमात्मा के चुटकुलों पर हंस रहे थे | देवी कौशल्या बोली – “यह मजाक का विषय नहीं है | मैंने ही उस दरवाजे को खोला था –मेरा मतलब मैं , परमात्मा | मैं ही थी जो राम के रूप में उस दरवाजे को घूर रही थी | मैंने ही लक्ष्मण के रूप में उस दरवाजे को खोला | मैंने ही चार राजकुमारों के रूप में उसका मजाक उड़ाया | और मैं ही हूँ जो कौशल्या के रूप में राजकुमारों को डांट रही हूँ | मैं , परमात्मा |”

“इस वक्तव्य पर राजकुमारों की हंसी फिर से छूट गई | उनके लिए देवी कौशल्या का यह वक्तव्य हर्ष-भरा था | देवी कौशल्या ने उस समय तो उनकी हंसी में अपनी हंसी मिलाना ही ठीक समझा और ठाना कि वे भोजन उपरान्त अपने योग यंत्रों का प्रयोग करके राजकुमारों को समझायेगी |

“जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, देवी कौशल्या एक महान योगिनी थी | उन्होंने कालदेव को भी अपना दास बना लिया था | उन्होंने कालदेव से कुछ विशेष दर्पण प्राप्त किये थे जिन्हें एकम दर्पण कहा जाता है | किसी साधारण दर्पण के विपरीत, एकम दर्पण इसके सामने उपस्थित मनुष्य का हुबहू प्रतिबिम्ब नहीं दिखाते | यह दर्पण प्रतिबिम्ब को थोड़ा बदल देता है : जैसे अगर कोई मनुष्य इसके सामने खड़ा होकर मुस्कुरा रहा है तो यह दर्पण उसे उदास दिखायेगा ; अगर कोई उदास खड़ा है तो उसे रोते हुए दिखायेगा ; अगर कोई रो रहा है तो उसे हँसते हुए दिखायेगा ; आदि आदि |

“साधारण दर्पण हमें हमारी अच्छी और बुरी विशेषताएं दिखाता है जिनसे हमारी सीमित दैहिक पहचान सुदृढ़ होती है : ‘मैं सुन्दर हूँ’, ‘मेरी आँखें सुन्दर हैं’, ‘मैं अपनी नाक से घृणा करता हूँ’, आदि आदि |

“एकम दर्पण हमारा एक भिन्न प्रतिबिम्ब दिखायेगा जिससे हमें अहसास होगा कि ‘शायद मैं जो अपने बारे में सोचता हूँ वो नहीं हूँ’ | अतः एकम दर्पण एक योग यंत्र है |

“देवी कौशल्या ने इन दर्पणों को अपने ध्यान कक्ष की अंदरूनी दीवारों पर लगावा रखा था | उस कक्ष का नाम भी एकम कक्ष था | यह क्रिस्टल के आकार का कक्ष था जिसके मध्य में केवल एक व्यक्ति के बैठने के लिए आसन था |

“भोजन के बाद उन्होंने निर्णय लिया कि वे राजकुमारों को एकम कक्ष दिखाएंगी | सबसे पहले उन्होंने राजकुमार राम को इन निर्देशों के साथ अंदर भेजा - “राम, आपको अपने आसन के सामने चार हथ्ये मिलेंगे | सबसे पहले आपको सफ़ेद रंग का हथ्या अपनी ओर खींचना है | अगर आपको जो कुछ दिखाई दे उससे आपको डर न लगे तो आप पीला हथ्या खींचना, उसके बाद नीला हथ्या और अंततः लाल हथ्या | अगर आप भयभीत हो जाएँ तो सभी हथ्यों को अपने से दूर धकेल देना |”

“राजकुमार राम अन्दर गये और देखा कि कमरा बहुत ही शांत था | ऐसा वहां कुछ नहीं था जिससे डर लगे | अन्दर की दीवारों का हर इंच पर्दों से ढका था | बिलकुल सन्नाटा छाया था | उन्होंने केंद्र में रखे आसन को ग्रहण किया और क्रिस्टल आकार के उस कक्ष को बारीकी से देखा |

“जब उन्होंने सफ़ेद हथ्या अपनी ओर खींचा, सामने की दीवार से एक पर्दा हट गया और एक दर्पण दिखा | उस दर्पण में उन्हें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दिया | पर क्या ये उनका प्रतिबिम्ब था ? वे तो पूर्ण शांत बैठे थे लेकिन उनका प्रतिबिम्ब भय से कांप रहा था | प्रतिबिम्ब की वास्तविकता परखने के लिए वे मुस्कुराये | लेकिन दर्पण में उनका प्रतिबिम्ब नहीं मुस्कुराया बल्कि उदास हो गया |

“राजकुमार राम को डर नहीं लगा | संभवतः उन्होंने इसको खेल की भांति लिया | दर्पण से खेलने के लिए वे हंसने लगे और दर्पण में उनका प्रतिबिम्ब रौने लगा |

“वे बोले - ‘मैं रामचन्द्र हूँ |’ दर्पण में उनका प्रतिबिम्ब बोला - ‘मैं अन्नमित्र हूँ |’

“वे पुनः मुस्कुराये | दर्पण में उनका प्रतिबिम्ब उदास हो गया | उन्होंने अब पीला हथ्या अपनी ओर खींचा | एक और पर्दा उठा, एक और दर्पण दिखा | यह दूसरा दर्पण पहले दर्पण से कुछ ऐसे कोण पे जड़ा था कि इसमें राजकुमार राम का सीधा प्रतिबिम्ब न दिखाई देकर, पहले दर्पण के प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था |

“अब राजकुमार राम कक्ष के मध्य में मुस्कुरा रहे थे , पहला दर्पण उन्हें उदास बैठे दिखा रहा था और दूसरा दर्पण उन्हें क्रोध में दांत पीसते हुए दिखा रहा था ।

“जब वे हँसे तो पहले दर्पण में वे रोते दिखाई दिए , और दुसरे दर्पण में हिंसापूर्वक हवा में घुस्से चलाते दिखाई दिए ।

“अब उन्होंने नीला हथ्था अपनी ओर खींचा जिससे एक और दर्पण उजागर हुआ । यह तीसरा दर्पण दुसरे दर्पण से कुछ ऐसे कोण पर रखा था कि इसमें दुसरे दर्पण में जो प्रतिबिम्ब था उसका प्रतिबिम्ब दिख रहा था ।

“जब वे मुस्कुराए तो पहले दर्पण में उन्होंने स्वयं को उदास पाया , दुसरे में क्रोधित और तीसरे में वे हँस रहे थे ।

“उन्हें समझ आ गया कि वे दर्पण उनका विकृत प्रतिबिम्ब दिखा रहे थे और सभी दर्पण कुछ इस तरह जड़े हुए थे कि केवल पहला दर्पण सीधे उनका प्रतिबिम्ब दिखा रहा था , दूसरा दर्पण पहले दर्पण वाले प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब दिखा रहा था , और तीसरा दर्पण दुसरे दर्पण वाले प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब ।

“अब उन्होंने बड़ा लाल रंग का हथ्था अपनी ओर खींचा जिससे कक्ष में जड़े सभी 108 दर्पण उजागर हो गए । सभी दर्पण कुछ ऐसे कोणों पर जड़े थे कि 108 वां दर्पण 107वे दर्पण वाले प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब दिखा रहा था और 107वा दर्पण 106वे दर्पण के प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब दिखा रहा था ।

“अब वे मध्य में मुस्कुरा रहे थे और 108 दर्पणों में उनके 108 दर्पण अलग अलग अवस्था में थे जैसे दुखी , क्रोधित , हिंसक , नाचते , गाते , हँसते आदि ।

“जब उन्होंने बोला ‘मैं रामचन्द्र हूँ’, सभी 108 प्रतिबिम्बों ने अलग अलग नाम बोले, रामचंद्र नहीं बोले ।

उन्हें यह एक बहुत अच्छा खेल लगा और उन्होंने कक्ष में आधा घंटा बड़े अच्छे से इस खेल को खेलते हुए बिताया । उन्हें बिल्कुल भी डर नहीं लगा । वे कक्ष से मुस्कुराते हुए बाहर आये ।

“फिर देवी कौशल्या ने लक्ष्मण , भरत और शत्रुघ्न को बारी बारी से भेजा । सभी कक्ष से 5 मिनट से कम समय बिता बिताकर बाहर आ गए । जब बाहर आये तब लक्ष्मण थोड़े विचलित लग रहे थे तथा भरत और शत्रुघ्न तो बुरी तरह से डर गए ।

“देवी कौशल्या ने सभी राजकुमारों को एकम कक्ष के अनुभव आत्मसात करने और उन पर विचार करने का समय दिया । शाम को जब वे उद्यान में खेलने आये तो देवी कौशल्या ने पूछा – “हे पुत्रो , क्या आप अपने आपको ‘मैं परमात्मा हूँ’ के अनुभव के पास महसूस कर रहे हो ? या अब भी ये आपके लिए मजाक है ?”

“केवल राजकुमार राम एकम कक्ष के अनुभवों को परमात्मा की शिक्षा से जोड़कर देख पाए । अन्य तीन राजकुमारों ने तो यह सोच लिया था कि उनकी माता ने उनके परमात्मा के विचार पर चुटकुले बनाने की सजा के तौर पर उस भयावह कक्ष में भेजा था ।

“राजकुमार राम बोले – “क्या परमात्मा एकम कक्ष जैसे ही किसी कक्ष में बैठे हैं और विश्व के अरबों खरबों प्राणी मात्र उस कक्ष की दीवारों पर परमात्मा के प्रतिबिम्ब हैं ?”

“देवी कौशल्या मुस्कुराई और बोली - “मैं परमात्मा हूँ | मैं यही पर बैठा हूँ | मेरे चारों ओर जो कुछ भी है - वृक्ष , फूल , पत्ते , पक्षी , पशु , मनुष्य -सब मेरे प्रतिबिम्ब हैं | तीन महानतम शक्तियाँ -ब्रह्मा , विष्णु , महेश -भी मेरे ही प्रतिबिम्ब हैं |”

“सात साल की उम्र के राम बोले - “मैं परमात्मा हूँ | और माता कौशल्या मेरा एक प्रतिबिम्ब मात्र हैं एक अदृश्य दर्पण पर | और वह प्रतिबिम्ब भी कह रहा है - “मैं परमात्मा हूँ | क्या मैं वास्तविक परमात्मा हूँ अथवा मैं भी एक प्रतिबिम्ब मात्र हूँ ? ये रामचन्द्र कौन है ? केवल एक प्रतिबिम्ब?”

“देवी कौशल्या मुस्कुराई | वे जानती थी कि राजकुमार राम परमात्मा का अनुभव नहीं कर रहे थे बल्कि केवल कल्पना कर रहे थे | लेकिन यह कल्पना सही दिशा में थी | यह कल्पना उन्हें एक दिन ‘मैं परमात्मा हूँ’ के अनुभव तक पहुँचाने वाली थी |

“उस दिन से राजकुमार राम हर किसी को परमात्मा के प्रतिबिम्ब के रूप में देखने लगे |

“कुछ महीने बाद शाही उद्यान में एक शेर लाया गया शिक्षा के उद्देश्य से | चारों राजकुमार उसके पिंजरे के पास आये | जबकि बाकी तीन राजकुमार शेर की दहाड़ तथा उसके शक्ति और क्रूरता को प्रकट करने पर मंत्रमुग्ध थे , राजकुमार राम उस जानवर की आँखों में देखकर सोच रहे थे - “मैं परमात्मा हूँ | यह शेर मात्र मेरा एक प्रतिबिम्ब है | लेकिन मैं अगर इस पिंजरे में जाऊँ तो यह शेर मुझे खा जाएगा | किसे खा जाएगा ? रामचन्द्र को ? लेकिन मैं रामचंद्र नहीं हूँ | रामचंद्र मात्र मेरा प्रतिबिम्ब है | मैं परमात्मा हूँ | मुझे कोई नहीं खा सकता | लेकिन शेर का रामचन्द्र को खाना एक प्रतिबिम्ब द्वारा दुसरे प्रतिबिम्ब को खा जाना है | एक हाथ दुसरे हाथ को खा जाए ! कितना खराब है ये | यह शेर ‘मैं परमात्मा हूँ’ कैसे हो सकता है?”

“राजा दशरथ उनके पास थे | उन्होंने पूछा - “राम , आपको इस शेर की आँखों में क्या रोचक दिखाई दे रहा है ?”

“ “कुछ नहीं पिताश्री |” राम बोले - “यह ‘मैं परमात्मा हूँ’ वाला ज्ञान बहुत ही अटपटा है | मैं समझ नहीं पा रहा हूँ | ... मेरा मतलब .. मैं अनुभव नहीं कर पा रहा हूँ | यह शेर मेरा प्रतिबिम्ब कैसे हो सकता है ? यह शेर ‘मैं परमात्मा हूँ’ कैसे हो सकता है ? यह एक क्रूर जानवर है | इसके बारे में कुछ भी ईश्वरीय नहीं है |”

“राजा दशरथ ने उत्तर दिया - “भगवान् , शैतान , साधू , चोर ... परमात्मा सब है | ये सब ‘मैं परमात्मा हूँ’ के प्रतिबिम्ब मात्र है |”

“युवा राम ने पूछा - “पिताश्री , अगर मैं अर्थात् राम तथा शेर परमात्मा के प्रतिबिम्ब हैं , तो मुझे ‘दो देह , एक जान’ जैसा अहसास इस शेर के सम्बन्ध में क्यों नहीं हो रहा है ? अथवा मेरे और आपके बीच में, या मेरे और किसी अन्य के बीच ‘दो देह , एक जान’ का अहसास क्यों नहीं हो रहा है?”

“ “चलो पतंगे और दर्पण का उदाहरण लेते हैं |” राजा दशरथ ने उत्तर दिया - “मान लो एक प्रकाश-पतंगा है जो किसी ऐसे कक्ष में फंसा हुआ है जहाँ केवल एक प्रकाश का स्त्रोत है और बहुत सारे दर्पण हैं | वह प्रकाश का स्त्रोत सभी दर्पणों में प्रतिबिम्बित हो रहा है | पतंगा इतने सारे प्रकाश के स्त्रोत पाकर खुश हो जाता है लेकिन उसकी खुशी थोड़े समय के लिए ही रहती है | प्रकाश के नजदीक जाने के चक्कर में वह किसी ठोस चीज से टकराता है और उसे पता चलता है कि वह मात्र एक प्रतिबिम्ब था , वास्तविक प्रकाश स्त्रोत नहीं | वह प्रकाश का असली स्त्रोत पाने के लिए बेचैन हो जाता है | वह दर्पण 2 , दर्पण 3 , दर्पण 4 आदि से टकराता है | हजारों दर्पणों से टकराने के पश्चात् उसे ज्ञान होता है कि प्रकाश का स्त्रोत कुछ और नहीं बल्कि वह स्वयं है |

“ “मैं भी उस पतंगे की भांति हूँ | मुझे ज्ञान है कि मैं परमात्मा हूँ और मैं ऐसे कक्ष के अन्दर हूँ जिसमें दर्पण ही दर्पण हैं | अगर मैं दर्पण 1 में देखता हूँ तो मैं शेर दिखता हूँ; दर्पण 2 में चीता दिखता हूँ; दर्पण 3 में बाज दिखता हूँ; दर्पण 438 में साधारण मनुष्य दिखता हूँ; दर्पण 476 में मैं रामचंद्र दिखता हूँ; दर्पण 481 में दशरथ दिखता हूँ; आदि आदि |

“अब मुझे एक विचार सूझता है। क्यों न मैं ऐसी जगह खड़ा हो जाऊँ कि मुझे मेरा प्रतिबिम्ब दो दर्पणों में एक साथ दिखे। ऐसी जगह क्यों नहीं हो सकती कि जहाँ से मैं दर्पण 1 और दर्पण 481 में स्वयं को एक साथ देख सकता हूँ। मैं स्वयं को शेर और दशरथ एक साथ देख सकूँ। दो देह और एक 'मैं'। तब मुझे पता चलता है कि दर्पण 481 और दर्पण 1 बहुत दूर दूर हैं। एक साथ शेर तथा दशरथ बनना संभव नहीं है।

“फिर मुझे पता चलता है कि दर्पण 481 और दर्पण 480 पास पास है और एक परस्पर स्थान ऐसा है जहाँ से 'मैं, परमात्मा' अपना प्रतिबिम्ब दोनों दर्पण में एक साथ देख सकता हूँ। दर्पण 480 में मैं स्वयं को देवी कौशल्या देखता हूँ और दर्पण 481 में दशरथ - एक ही समय में। दो देह, एक 'मैं'। आत्ममित्र! ये दो प्रतिबिम्ब - दशरथ और कौशल्या - एक दुसरे के आत्ममित्र हैं।

“राम, आप भी एक दिन अपने आत्ममित्र से मिल सकते हैं। जब आप अपने आत्ममित्र की आँखों में देखेंगे, 'मैं परमात्मा हूँ' का अनुभव बिलकुल सपष्ट होगा। कोई भ्रम नहीं होगा। कोई क्यों-कैसे-यदि-परन्तु आपके अनुभव को धुंधला नहीं करेगा।”

“हे मातांगो, माता सीता को भी यह अहसास छोटी ही उम्र में हो गया था कि केवल एक परमात्मा है। वे बचपन में 'शैतान का कुंड' नामक एक खेल खेला करती थी। शतरंज की भांति यह खेल दो व्यक्तियों के बीच खेला जाता है। भूमि पर वर्गाकार डब्बे बनाये जाते हैं। उन वर्गों के कोनों पर कंकड़ रखे जाते हैं और फिर खिलाड़ी नियमों के अनुसार उन कंकड़ों को आगे बढ़ाते हैं। एक डब्बे का नाम 'शैतान का कुंड' होता है। अगर किसी खिलाड़ी के 4 कंकड़ उस डब्बे में बंधकर रह जाँ, अर्थात् आगे पीछे न किये जा सकें तो वह खिलाड़ी खेल हार जाता है।

शुरू में देवी सीता के लिए यह खेल अत्यंत रुचिकर था। लेकिन समय के साथ वे इस खेल में इतनी कुशल हो गईं थी कि कंकड़ों के शुरूआती स्थान तथा विरोधी खिलाड़ी की पहली चाल से ही वे पूरे आगे के खेल के बारे में बता सकती थी कि कौन सी चालें चली जायेंगी और परिणाम क्या होगा।

“एक दिन वे यह खेल अपने पिता राजा जनक के साथ खेल रही थी। कुछ मिनट के खेल के पश्चात् वे बोली - “पिताश्री, मुझे ऐसा लगता है कि आप मेरे प्रतिबिम्ब हैं केवल थोड़ी सी भिन्नता के साथ।”

“राजा जनक ने उत्सुकता से उनकी ओर देखा और पूछा - “ऐसा आपको क्यों लगता है?”

उन्होंने उत्तर दिया - “पिताश्री, मैं अपनी चाल चलते ही यह अंदाजा लगा लेती हूँ कि आप कौन सी चाल चलेंगे। आपकी चाल मुझे अपनी चाल का प्रतिबिम्ब मालूम होती है, बस थोड़ी सी भिन्नता के साथ। उस भिन्नता का मैं अंदाजा लगा लेती हूँ। अतः आपकी चाल मुझे बिलकुल अपनी चाल का प्रतिबिम्ब मालूम होती है। और आप भी मुझे किसी अदृश्य दर्पण में मेरा प्रतिबिम्ब मालूम होते हैं, बस थोड़ी सी भिन्नता के साथ। आजकल मैं जब भी यह खेल खेलती हूँ, मुझे अनुभव होता है कि मेरा विरोधी मेरा ही एक प्रतिबिम्ब है।”

“राजा जनक बोले - “आप सही हैं। मैं परमात्मा हूँ और जनक तथा सीता मेरे प्रतिबिम्ब मात्र हैं।”

“राजा जनक ने सीता को परमात्मा का अनुभव कैसे किया जाए इसके बारे में बताना शुरू कर दिया। यह शुरू में उनके लिए भ्रमित करने वाला था लेकिन जब वे किशोर अवस्था में पहुँचीं तो उन्हें परमात्मा का अनुभव होने लगा था। राजा जनक ने उनको आत्ममित्र के बारे में भी बताया। वे इस बारे में सोचने लगी थी कि उससे मिलकर कैसा अनुभव होगा जो उन्हें अपना ही रूप लगेगा : दो देह, एक जीवन।

“जब मैं काल में पीछे जाकर माता सीता और प्रभु राम की पहली मुलाकात देखता हूँ तो पाता हूँ कि वह मुलाकात बहुत छोटी थी। वह सीता स्वयंवर का 5वां दिन था। रोज उस समारोह के दो सत्र हो रहे थे : एक दोपहर के खाने के पहले और एक बाद में।

“जब ऋषि विश्वामित्र राजकुमार राम और लक्ष्मण के साथ जनक के महल में पहुंचे, तब समारोह का दोपहर बाद वाला सत्र चल रहा था। महल में उनका स्वागत एक मंत्री ने किया जो उन्हें सीधे शाही अतिथि गृह में ले गया। जलपान के बाद मंत्री ने ऋषि विश्वामित्र से स्वयंवर सभा में चलने का आग्रह किया। नए आये राजकुमारों को बीच सत्र के स्वयंवर सभा में जाने की आज्ञा नहीं थी क्योंकि हर सत्र से पहले एक पूजा होती थी जिसमें उस सत्र के भाग लेने वाले राजकुमारों का उपस्थित होना आवश्यक था। राजकुमार राम अगले दिन के सुबह के सत्र में भाग ले सकते थे। इसलिए राजकुमार राम और लक्ष्मण को जनक के महल का भ्रमण करवाने ले जाया गया।

“करीब दो घंटे बाद सूरज ढल चूका था और महल के दीपक जल गए थे। अयोध्या के राजकुमार महल का भ्रमण करने के पश्चात् शाही अतिथि गृह की ओर लौट रहे थे। एक गलियारे में उनका मिलना कन्याओं के एक दल के साथ हुआ। उनमें से एक थी राजकुमारी सीता।

“राजकुमार राम और राजकुमारी सीता ने एक दुसरे को देखा तो वे कालहीन दशा में चले गए। महल का जो कर्मि राजकुमार राम और लक्ष्मण को भ्रमण करा रहा था और उनके साथ था, उसने अयोध्या के राजकुमारों का परिचय मिथिला की राजकुमारी से करवाया। लेकिन न तो राम सुन रहे थे और न सीता। जब वे कालहीन दशा से बाहर आये तब राजकुमार राम के होंठों से जो शब्द निकले, वे थे, “आपको सायं की पूजा के लिए देर हो रही है।” और फिर वे बिना किसी शंका के अथवा झिझक के अपने अपने रास्ते आगे बढ़ लिए।

“राजकुमार राम को राजकुमारी सीता की पूजा के समय के बारे में कैसे पता चला?

“भगवान् राम और माता सीता ने अपनी इस पहली मुलाकात के बारे में मुझे विस्तार से बताया था। दोनों ने कहा था की पहली बार का वह मिलन ऐसा था जैसे कोई अँधा व्यक्ति दृष्टि प्राप्त कर ले, कोई बिना पैर का व्यक्ति पैर प्राप्त कर ले। वह एक पूर्णता का अनुभव था। जब से उन्होंने “मैं परमात्मा हूँ” का ज्ञान हुआ था, वे अपने आत्ममित्र की कल्पना किया करते थे। और जब वे मिले तो वह वाकई ‘दो देह, एक जान’ का अनुभव था। अन्यथा राजकुमार राम को कैसे पता चलता कि सीता को प्रार्थना के लिए देरी हो रही थी? सांयकाल की पूजा का विचार राजकुमारी सीता के मन में था लेकिन राजकुमार राम को ऐसा लगा जैसे वह उनके मन में हो ... क्योंकि दोनों के मन जुड़ गए थे।

“अगले दिन स्वयंवर के प्रातःकालीन सत्र में राजकुमार राम एक रितुशुन्य नामक राजकुमार के पास बैठे थे जिसकी बारी उनसे पहले आने वाली थी। समारोह राजा जनक के महल के उसी आँगन में था जहाँ पर बरसों पहले ऋषियों ने माता सीता के जन्म का यज्ञ किया था। शिव धनुष मध्य में एक चट्टान जैसे चबूतरे पर रखा था।

“रितुशुन्य धनुष के नजदीक गया और चबूतरे को अपने माथे से छुआ। फिर वह उपस्थित ऋषियों का आशीर्वाद लेने के लिए झुका। उसके बाद उसने मिथिला के राजपरिवार का अभिवादन किया। उसने धीरे से अपना हाथ धनुष की ओर बढ़ाया और उसे सावधानी से पकड़ा। छूने से तो लकड़ी साधारण ही मालुम हुई। उसने धनुष को पकड़कर ऊपर की ओर बल लगाया। धनुष ऐसे ऊपर उठ गया जैसे भारहीन हो। उसका हृदय हर्ष तथा आश्चर्य से कूद पड़ा। उसने नहीं सोचा था कि धनुष इतनी आसानी से उठ जाएगा।

“लेकिन उसका हर्ष थोड़ी देर ही रहा। उसको अहसास हुआ कि उसने धनुष की छाया मात्र को उठाया है; असली धनुष अपने स्थान पर ज्यों का त्यों था। जैसे ही उसने धनुष की उस छाया को अपने हाथ से छोड़ा, वह गायब हो गई। उसने हड़बड़ी में धनुष उठाने के कई प्रयास किये किन्तु हर बार उन्हें धनुष की छाया ही हाथ लगी। घंटी बजी। उसका समय समाप्त हो गया था। वह अपनी जगह पर वापिस आ गया, उदास।

““यह वास्तविक धनुष नहीं है, यह भ्रम है।” उसने राजकुमार राम की ओर खीजकर कहा।

““क्या मतलब ये भ्रम है? जितनी मेरी सांस वास्तविक है, उतना ही वास्तविक ये धनुष है।” राजकुमार राम बोले।

“राजकुमार लक्ष्मण जो पिछली पंक्ति में राम के बिलकुल पीछे बैठे थे, उन्होंने इन शब्दों को सुना तो उन्हें काफी अजीब लगा। आखिर राजकुमार राम धनुष की तुलना अपनी सांस के साथ क्यों कर रहे थे?

“वास्तव में, यह विचार राजकुमारी सीता का था। उनके लिए धनुष उनकी सांस की तरह था। उनका जीवन उस पर निर्भर था। उनका यह विचार राजकुमार राम के मुख से प्रकट हो गया क्योंकि उनके मन आपस में जुड़े हुए थे। उनके विचार राजकुमार राम को अपने विचार प्रतीत हुए इसलिए उन्हें अपने मुख से निकले ये शब्द अजीब नहीं लगे।”

“जब राजकुमार राम का नाम बुलाया गया तो वे धनुष के पास इतने शांत और आराम से पहुंचे जैसे कोई मनुष्य पानी पीने घड़े के पास जा रहा हो। वे बिलकुल भी बेचैन नहीं थे। न ही उनके पास धनुष उठाने की कोई योजना थी। उनके मन में ऐसी भावना थी कि वे धनुष के पास जायेंगे और उसे आराम से उठा लेंगे।

“वहां उपस्थित सब जनों को आदर प्रकट करने के बाद प्रभु राम धनुष के पास खड़े हो गए, उनके बिलकुल सामने राजकुमारी सीता का आसन था। राजकुमार राम की आँखें लगभग बंद थीं, सिर झुका हुआ, हाथ सामने फैले हुए, उनकी हथेलियाँ आसमान की ओर थीं। सब इस असमंजस में थे कि वे अपने हाथ धनुष को उठाने के लिए नीचे क्यों नहीं ले जा रहे थे? क्या वे कोई मंत्र जप रहे थे? लेकिन उनके होंठ तो नहीं हिल रहे थे। क्या वे अपनी मन की शक्ति से धनुष को उठाने का प्रयास कर रहे थे?

“सबका ध्यान धनुष पर था। कोई भी राजकुमारी सीता की ओर नहीं देख रहा था। किसी ने ध्यान नहीं किया कि राजकुमारी सीता के दोनों हाथों की उंगलिया आपस में जकड़ी हुई थी और उनके हाथ उनके घुटनों के ऊपर रखे थे। किसी ने ध्यान नहीं दिया कि उनके हाथ धनुष की आकृति बना रहे थे। उनके जुड़े हाथ उनकी इस इच्छा को दर्शा रहे थे कि धनुष किसको उठाना चाहिए। जब तक उनके हाथ जुड़े थे, कोई भी उस धनुष को नहीं उठा सकता था, स्वयं शिव भी नहीं। और वे अपने हाथों को जान बुझकर नहीं जकड़े हुए थी। वह इतना अस्वैच्छिक था कि स्वयं उन्हें पता नहीं था कि उनके जुड़े हाथों और धनुष में कोई सम्बन्ध था।

“कुछ क्षण पश्चात् देवी सीता ने अपने हाथ खोल लिए। उसी क्षण राजकुमार राम अपने हाथ नीचे ले गए, धनुष को कोमलता के साथ पकड़ा, और धीरे धीरे ऊपर उठाया। प्रायः एक योद्धा धनुष को बीच में से पकड़ता है किन्तु राजकुमार राम उसको एक छोर से पकड़े थे—वह छोर जहाँ पर रस्सी खुली हुई थी। जब वे धनुष उठा रहे थे तब राजकुमारी सीता की बायीं भुजा धीरे धीरे ऊपर उठी और उनकी कोहनी घुटने पर ही रही। राजकुमार राम ने धनुष की डोरी ऐसे बाँधी जैसे वे किसी कोमल कलाई पर पवित्र धागा बाँध रहे हों।” हनुमान जी ने अपने व्याख्यान को विराम दिया।

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है।

[Like](#) You and 20K others like this.

[--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---](#)

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढ़ने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं। अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया।" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा।" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति और भी बढ़ गई।" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं। आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं।

अगर अध्याय पढ़ने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं।

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धूल चढ़ गई है। अगर अध्याय पढ़ने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है। आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें। अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए।

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धूल की परत साफ़ कर ली है। अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धूल की परत वहाँ पुनः न बैठे। (जब आप अपने घर में कोई आइना कपड़े से साफ़ करते हैं तो आप उस कपड़े को अन्दर घुँही नहीं रख देते, आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धूल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है। अर्पण फूलों, फलों या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुड़ी हुई हो। मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अर्पण करने का विधान है। आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुड़ा हुआ है।

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे। वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे। लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांडवों की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए। उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा। लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में। उदाहरण के तौर पर, मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था।

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाएं करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरूप का दर्शन कराया है। लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों। क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है? या अवतार लेने वाले हैं? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं। शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाएगा।

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है। अगर आप अपना कोई प्रश्न, संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं। (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं। अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढ़ने के 108 घंटे के अन्दर होता है।



Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter. You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

Your successful attempts of Arpanam on this chapter are listed individually below :

Attempt ID	amount	Status	Time
535677	Rs. 108	Successful	06/12/2016 - 10:40

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

[<< Previous](#)
[Next Chapter >>](#)

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

[Home](#) [मातंग इतिहास](#) [Terms of Use](#) [Privacy Policy](#) [Reach Us](#) [तकनीकी सहायता](#) Setuu © 2016 [Read in English](#)

[Gratitude Wall](#) [Devotee Queries](#) [Experiences and Prayers](#) [Hanuman Leelas](#)

Print

